465वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | दशम् अंक | मई 2017

इस अंक में...

13 सफल होने के लिए अनिवार्य है लक्ष्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
29 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 यूएनडीपी की मानव विकास रैंकिंग (2016) में भारत का 131वाँ स्थान
35 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
41 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 राज्य समाचार
63 खेलकूद
66 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
68 युवा प्रतिभाएं
74 कैरियर लेख—आई.ए.एस. 2017 की तैयारी शुरू करते हुए, यह समय है अपने आप से बात करने का
77 फोकस—प्रत्येक के लिए मानव विकास
80 स्मरणीय तथ्य
83 विश्व परिदृश्य
87 राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति-2017
88 समसामयिक अन्तर्राष्ट्रीय लेख—दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामक जल-कूटनीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण (हेग) का फैसला
91 द्विपक्षीय संधि—सिंधु जल संधि के सामरिक निहितार्थ
93 वन्य जीव संरक्षण लेख—साइट्स का 17वाँ कोप सम्मेलन
95 सामयिक लेख—पर्यावरण घटनाचक्र
97 राज्य-पद्धति लेख—सहकारी संघवाद
99 कैरियर लेख—एस.एस.बी.
105 कृषि लेख—संवृद्धि की ओर उन्मुख सम्बद्ध कृषि क्षेत्र
108 सार संग्रह
112 सामान्य अध्ययन—मध्य प्रदेश पी.एस.सी. राज्य सेवा (मुख्य) परीक्षा, 2015
121 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) उत्तराखण्ड लोक सेवा सम्मिलित अवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा, 2016
126 (ii) मध्य प्रदेश राज्य सेवा एवं राज्य वन सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2016
133 रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया अधिकारी ग्रेड 'बी' परीक्षा, 2016
138 एस.एस.सी. सी.जी.एल. (चरण-I) परीक्षा, 2016
139 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
141 सामान्य ज्ञान अद्यतन
143 ऐच्छिक विषय—(i) वाणिज्य—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
149 (ii) मनोविज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
158 तर्कशक्ति—यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. परीक्षा, 2016
165 अंकगणित—एस.एस.सी. सी.जी.एल. (चरण-I) परीक्षा, 2016
168 क्या आप जानते हैं ?
169 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—आर्थिक असमानता की समाप्ति हेतु राज्य का हस्तक्षेप आवश्यक है
172 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—विज्ञान मनुष्य को सभ्यता की सीढ़ी पर चढ़ाता है और साहित्य इसे मानवता के उच्च शिखर पर
173 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-454 का परिणाम
174 English Language–SBI Bank P.O. (Pre.) Exam., 2016
177 रोजगार समाचार

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सफल होने के लिए अनिवार्य है लक्ष्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता

ऐसे देखा जाए, तो हर कोई अपने जीवन में सफल होना चाहता है, परन्तु सबको अपेक्षित सफलता मिलती है क्या ? इसके एकाधिक कारण हो सकते हैं, किन्तु एक महत्वपूर्ण कारण स्पष्ट लक्ष्य न तय कर पाना होता है. सोचिए जरा, अगर फुटबाल के मैदान में कोई गोल पोस्ट ही न हो या क्रिकेट के खेल में विकेट न हो, तो क्या होगा ? तभी तो ए.एच. ग्लासगो कहते हैं. ''फुटबाल की तरह जिन्दगी में भी आप तब तक आगे नहीं बढ़ सकते, जब तक आपको अपने लक्ष्य का पता न हो.''

अभी हाल ही में प्रदर्शित केतन मेहता निर्देशित फिल्म, 'मांझी-दि माउण्टेन मैन' की खूब चर्चा हुई. यह अकारण नहीं है. इस फिल्म में बिहार के गरीब-शोषित समाज के एक ऐसे इंसान के वास्तविक जीवन को फिल्माने का प्रयास किया गया है, जिसने गरीबी और सामाजिक विरोध के बावजूद सिर्फ अपने दम पर एक विशाल पहाड़ को चीरकर सड़क बनाने का लक्ष्य अपने सामने रखा. दशरथ मांझी ने इसके निमित्त अनर्थक परिश्रम किया और रास्ते में आने वाले तमाम अवरोधों को चीरते हुए सफलता हासिल की. बीते दिनों मीडिया में इस बात की भी खूब चर्चा हुई कि प्रख्यात क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी ने आगरा में पैरा जम्पिंग के चुनौतीपूर्ण लक्ष्य को किस तरह हासिल किया. सभी जानते हैं कि महाभारत में लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता के मिसाल के तौर पर पाण्डव पुत्र अर्जुन का नाम उभर कर आता है. ऐसा इसलिए कि अर्जुन ने एकाग्र होकर केवल अपने लक्ष्य पर फोकस किया था और परिणामस्वरूप चिड़िया की आँख पर तीर से निशाना साधने में वही सफल रहे थे.

तभी तो स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, ''लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो. हर समय उसका चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो.'' खुद स्वामीजी का जीवन इसका ज्वलन्त उदाहरण है.

कुछ और प्रसिद्ध लोगों का उदाहरण लेते हैं, जिन्होंने लक्ष्य के प्रति अपने समर्पण के बलबूते पर अपने-अपने क्षेत्र में अविश्वसनीय सफलता हासिल की और नए कीर्तिमान स्थापित किए.

खेलकूद की दुनिया में हमारे देश के अनेक खिलाड़ियों ने सैकड़ों नए मानदण्ड बनाए, लेकिन आज यहाँ हम फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह की चर्चा करेंगे. 'भाग मिल्खा भाग' नाम से चर्चित फिल्म आपने भी देखी होगी, जिसमें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित मिल्खा सिंह के जोश, जुनून और मेहनत को बखूबी दर्शाया गया है. तमाम अवरोधों एवं परेशानियों के बावजूद मिल्खा सिंह कैसे एक के बाद एक रिकॉर्ड तोड़ते गए. तभी तो वे आज भी देश-विदेश के लाखों-करोड़ों युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं.